Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindi Tul. 2

13. C. 30.

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Newul Kishore.

Dohāvalī.

Dohawali

दोहावली ॥

गोसाईंतुलसीदासकृत ॥

जिसमें ज्ञान भक्ति वैराग्य मिश्रित दोहेहैं और
विशेष कर संतोष की शिक्षा प्रधान है ॥

वही

सम्पूर्ण रामभक्तानुरागियों के उपकारार्थ

दूसरी बार

स्थान लखनऊ

मुंशीनवलकिशोरकेछापेखानेमें छापीगई

अकटूबर सन् १८८२ ई० ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

दोहावली ॥

दोहा।

रामबामदिशिजानकी लषणदाहिनीओर ॥ ध्यान सकलकल्याणमय सुरतरुतुलसीतोर १ सीतालषणसमेत प्रभु सोहततुलसीदास ॥ हरषतसुरबरषतसुमन सगुण सुमंगलबास २ पंचबटीबटबिटपतरु सीतालषणसमेत ॥ सोहततुलसीदासप्रभु सकलसुमंगलदेत ३ चित्रकूटसब दिनबसत प्रभुसियलषणसमेत ॥ रामनामजयजायकहि तुलसीअभिमतदेत ४ पयअहारफलखाइजो रामनामषट मास ॥ सकलसुमंगलसिद्धिसब करतलतुलसीदास ५ रामनाममणिदीपधरु जीहदेहरीद्वार ॥ तुलसीभीतरबाहिर जोचाहसिउजियार ६ हियनिर्गुणनयननसगुण रसनारामसुनाम ॥ मनहुँपुरटसंपुटलसत तुलसीललित ललाम ७ सगुणध्यानरुचिसरसनहिं निर्गुणमनतेदूरि ॥ तुलसीसुमिरहुरामको नामसजीवनमूरि ८ एकछत्रयक मुकुटमणि सबबर्णहुपरजोइ ॥ तुलसीरघुबरनामकेबरण बिराजतदोइ ९ रामनामकोअंकहै सबसाधनहैसून ॥ अंकगयेकछुहाथनहिं अंकरहेदशगून १० नामरामको कल्पतरु कलिकल्याणनिवास ॥ जोसुमिरतभयोभागते तुलसीतुलसीदास ११ रामनामजपिजोहजनभयेसुकृतसु

खशालि॥तुलसीयहांजोआलसी गयोआजुकीकालि १२ नामग़रीबनिवाजको राजदेतजनजोन॥ तुलसीमनपरहर तनहिंघुरबिनिआकीवोन१३काशीबिधिबसितनुतजैहठत नतजैप्रयाग॥तुलसीजोफलसोसुलभरामनामअनुराग१४ मीठोअरुकटुवतिभरोरौताईअरुषेम॥स्वारथपरमारथसुल भरामनामकेप्रेम १५ रामनामसुमिरतसुयश भाजनभये कुजात॥कुतरुकुसुरपुरराजमग लहतभुवनबिख्यात१६ स्वारथसुखसपनेहुअगम परमारथपरबेश ॥रामनामसु मिरतमिटहिं तुलसीकठिनकलेश१७मोरमोरसबकहकह सितूकोकहुनिजनाम॥ कैचुपसाधहिसुनसमुझिकैतुलसी जपुराम १८ हमलखुहमहिंहमारलखु हमहमारकेबीच॥ तुलसीअलखहिकालखहि रामनामजपनीच १९ राम नामअबलेवबिनुपरमारथकीआश॥ बर्षतबारिदबूंदगहि चाहतचढ़नअकाश२० तुलसीहठिहठिकहतनितचितसुन हितकरमान॥लाभरामसुमिरनबडोबड़ीबिसारेहान२१ बिगरीजन्मअनेककी सुधरैअबहींआजु॥ होहिरामकी रामजपु तुलसीतजिकुसमाज २२ प्रीतिप्रतीतिसुरीतसों रामनामजपुराम॥ तुलसीतेरोहैभलो आदिमध्यपरिनाम २३ दंपतिरसरसनादशन परिजनबदनसगेह ॥ तुलसी हरहितबरणशिशु संपतिसहजसनेह २४ बर्षाऋतुरघु- पतिभगति तुलसीशालिसुदास॥ रामनामबरबरणजग सावनभादोंमास २५ रामनामनरकेशरी कनककशिपु- कलिकाल॥ जापकजनप्रहलादजिमि पालहिंदलसुर साल २६ रामनामकलिकामतरु सकलसुमंगलकंद॥

सुमिरतकरतलसिद्धिसब पगपगपरमानंद २७ रामनाम
कलिकामतरु रामभक्तिसुरधेनु ॥ सकलसुमंगलमूलजग
गुरुपदपँकजरेनु २८ यथाभूमिबशबीजमें नखतनिवास
अकाश ॥ रामनामसबधरममय जानततुलसीदास २६
सकलकामनाहीनजे रामभक्तरसलीन ॥ नामप्रेमपीयूष
ह्रदतिनहुंकियेमनमीन ३० ब्रह्मरामतेनामबड़ बरदायक
बरदान ॥ रामचरितशतकोटिमहँ लियमहेशजियजान
३१ सबरीगीधिसुसेवकन सुगतिदीन्हिरघुनाथ ॥ नाम
उधारेअमितखल देवबिदितगुणगाथ ३२ रामनामपर-
रामतेप्रीतिप्रतीतिभरोस ॥ सोतुलसीसुमिरतसकल स-
गुनसुमंगलकोस ३३ लंकबिभीषणराजकपि पतिमारुत
खगमीच ॥ लहीरामसोनामरति चाहततुलसीनीच ३४
हरनअमंगलअघअखिल करनसकलकल्याण ॥ रामनाम
नितकहतहर गावतवेदपुराण ३५ तुलसीप्रीतिप्रतीतसों
रामनामजपजागु॥ कियेहोयबिधिदाहिनोदेइअगेह्वीभागु
३६ जलथलनभगतिअमितअति अगजगजीवअनेक ॥
तुलसीतोहिंसेदीनको रामनामगतएक ३७ रामभरोसो
रामबलरामनामबिश्वास ॥ सुमिरिनाममंगलकुशल मां-
गततुलसीदास ३८ रामनामरतिरामगति रामनामबि-
श्वास॥सुमिरतशुभमंगलकुशलचहुंदिशितुलसीदास३९
रसनासांपिनिबदनबिल जेनजपहिंहरिनाम ॥ तुलसी
प्रेमनरामसों ताहिबिधाताबाम ४० हियफाटहुफूटहुन-
यनजरउतेतनकेहिकाम ॥ द्रवहिंश्रवहुपुलकहिंनहीं तु-
लसीसुमिरतराम ४१ रामहिंसुमिरतरणभिरत देतपरत

गुरुपाय ॥ तुलसीजिनहिंनपुलकतन तेजगजीवतजाय
४२॥सोरठा॥ हृदयसोकुलिशसमान जोनद्रवहिहरिगुण
सुनत ॥ करनरामगुणगान जीहसोदादुरजीहसम ४३
श्रवैनसलिलसनेह तुलसीसुनिरघुबीरयश॥तेनैनाजनि
देहुरामकरहुबरुआंधरे ४४ रहैनजलभरिपूरि रामसुयश
सुनरावरी ॥ तिनआंखिनमेंधूरि भरभरमूठीमेलिये ४५
बारकसुमिरततोहिं होहिंतिनहिंसनमुखसदा ॥ क्योंन
सम्हारहिमोहिं दयासिंधुसमरत्थके ४६ साहिबहोत
सरोष सेवककोअपराधसुनि ॥ अपनेदेखेदोषरामनकब-
हूंउरधरे ४७ ॥ दोहा ॥ तुलसीरामहिआपुते सेवककी
रुचिमीठ ॥ सीतापतिसेसाहिबहि कैसेदीजैपीठ ४८ तु-
लसीजाकेहोयगी अंतरबाहरदीठ ॥ सोक्योंकृपालहिदेइ
गो केवटपालहिपीठ४९ प्रभुतरुतरकपिडार परहिकिये
आपुसमान ॥ तुलसीकहूंनरामसों साहिबशीलनिधान
५० रेमनसबसोंनिरसकै सरसरामसोंहोहि ॥ भलोसि-
खावनदेतहैं निशिदिनतुलसीतोहि ५१ हरोचरहिंतापहिं
बरतफरेपसारहिंहाथ॥ तुलसीस्वारथमीतसब परमारथ
रघुनाथ ५२ स्वारथसीतारामसों परमारथसियराम॥
तुलसीतेरोदूसरे द्वारकहाकहुकाम ५३ स्वारथपरमारथ
सकल सुलभएकहीवोर॥द्वारदूसरेदीनता उचितनतुल-
सीतोर ५४ तुलसीस्वारथरामहित परमारथरघुबीर॥
सेवकजाकेलषणसे पवनतनयरणधीर ५५ ज्योंजगबैरी
मीनको आपुसहितपरिवार ॥ त्योंतुलसीरघुबीरबिनु
गतिआपनीबिचार ५६ रामप्रेमबिनदूसरो रामप्रेमहीं

पीन ॥ रघुबरकबहूंकरहिंगे तुलसीज्योंजलमीन ५७ रामसनेहीरामगति रामचरणरतिजाहि॥तुलसीफलजग जन्मको दियोबिधाताताहि ५८ आपुआपनेतेअधिक जेहिप्रियसीताराम ॥ तेहिकेपगकीपानहीं तुलसीतनको चाम ५९ स्वारथपरमारथरहित सीतारामसनेह ॥ तुलसीसोफलचारिको फलहमारमतएह ६० जेजनरूखे बिषयरस चिकनेरामसनेह ॥ तुलसीतेप्रियरामकोकानन बसहिंकिगेह ६१ यथालाभसंतोषसुख रघुबरचरणसनेह ॥ तुलसीज्योंमनमूढ़सों जसकाननतसगेह ६२ तुलसीजोपैरामसोंनाहिनसहजसनेह॥मूड़मुड़ायोबादिही भांड़भयोतजिगेह ६३ तुलसीश्रीरघुबीरतजि करैभरोसो और ॥ सुखसंपतिकीकाचली नरकहुनाहींठौर ६४ तुलसीपरिहरिहरिहरहि पांवरपूजहिभूत ॥ अंतफजीहत होहिंगे ज्योंगनिकाकेपूत ६५ सेयेसीतारामनहिं भजेन शंकरगौरि । जन्मगँवायोबादिही रटतपराईपौरि ६६ तुलसीहरिअपमानते होइअकाजसमाज ॥ राजकरतरज मिलगये सदलसकुलकुरुराज ६७ तुलसीरामहिंपरिहरे निपटहानिसुनिबेउ ॥ सुरसरिगतसोईसलिल सुरासरिसगंगेउ ६८ रामदूरिमायाबढ़ति घटतिजानमनमांह॥ धूरिहोतिरबिदूरिलखि शिरपरपगतरछांह ६९ साहिब सीतानाथसों जबघटिहैंअनुराग ॥ तुलसीतबहींभालते भभरिभागिहैंभाग ७० करिहौकोशलनाथतजिजबहीं दूसरिआस ॥ जहांतहांदुखपाइहौ तबहींतुलसीदास ७१ बिंधनईधनपाइयेसायरजुरैननीर ॥ पड़ैउपासकुबेर

घरजोबिपच्छरघुबीर ७२ बर्षाकोगोबरभयोकोचहैको करैप्रीति ॥ तुलसीतूअनुभवहिअब रामबिमुखकीरीति ७३ सबहिसमरथहिसुखदप्रिय अच्छमप्रियहितकारि॥ कबहुंनकाहुहिरामपै तुलसीकहाबिचारि ७४ तुलसी उद्यमकरमयुगतबजहँरामसुडीठ ॥ होइसुफलसोइता हिसबसम्मुखप्रभुतनपीठ ७५ प्रेमकामतरुपरिहरतसे-वतकलितरुठूंठ ॥ स्वारथपरमारथचहत सकलमनोरथ झूंठ ७६ निजदूषणगुणरामके समुझेतुलसीदास ॥ होय भलोकलिकालहू उभयलोकअनयास ७७ कैतोहिंलागे रामप्रियकैतुप्रभुप्रियहोहि ॥ द्वैमहंरुचैजोसुगमसोकी वैतुलसीतोहिं ७८ तुलसीद्वैमहंएकहीखेलछांड़िछलखे-लु॥ कैकरुममतारामसों कैममतापरहेलु ७९ निगमअग म साहेबसुगमरामसाचिलोचाह ॥ अंबुअसनअवलोकि यतसुलभसबैजगमाह ८० सम्मुखआवतपथिकज्योंदिये दाहिनाबाम॥ तैसोइहोतसुआपकीत्योंहीतुलसीराम ८१ रामप्रेमपथमोबयेदियेविषयतनपीठ॥ तुलसीकेंचुलिपरि हरे होतसांपहूडीठ ८२ तुलसीजौलौं बिषयकीसुधामाधु-रीमीठ ॥ तौलौंसुधासहस्त्रसमरामभगतशुठसीठ ८३ जै सोतैसोरावरोकेवलकोशलपाल ॥ तौतुलसीकोहैभलोति हूंलोकतिहुंकाल ८४ हैतुलसीकेएकगुणअवगुणनिधिकहैं लोग ॥ भलोभरोसोरावरोरामरीझिबेयोग ८५ प्रीतिरा ममोनीतपथचलिपरागरिसजीत॥ तुलसीसंतनकेमतेइहै भक्तिकीरीति ८६ सत्यबचनमानसबिमलकपटरहितक-रतूति ॥ तुलसीरघुबरसेवकहिसकेनकलियुगधूति ८७

तुलसीसुखजोरामसोंदुखीसोनिजकरतूति ॥ करमबचन
मनठीकजेहितेहिनसकैकलिधूति ८८ नातोनातेरामकेरा
मसनेहसनेहु ॥ तुलसीमांगतजोरिकरजन्मजन्मबुधिदेहु
८६ सबसाधनकोएकफलजेहिजानैसोइजान ॥ ज्योंत्यों
मनमंदिरबसहिरामधरेधनुबान ६० जोजगदीशतौअति
भलोजोमहीशतौभाग ॥ तुलसीचाहतजन्मभरिरामचरण
अनुराग ६१ परहुनरकफलचारशिशुमीचडाकिनीखाउ॥
तुलसीरामसनेहकोजोफलसोजरिजाउ ६२ हितसोंहित
रतिरामसोंरिपुसोंबैरतिहाउ ॥ उदासीनसबसोंसरलतु-
लसीसहजस्वभाउ ६३ तुलसीममतारामसोंसमतासब
संसार ॥ रागनरोषनदोषदुखदासभयेभवभार ६४ रा-
महिउरुकरुरामसोंममताप्रीतिप्रतीत ॥ तुलसीनिरुपधि
रामकोभयेहारिहूंजीत ६५ तुलसीरामकृपालसोंकहि
सुनाहुगुणदोष ॥ होयदूबरीदीनतापरमपीनसंतोष ६६
सुमिरणसेवारामसोसाहबसोंपहिंचान ॥ ऐसेहुलाभन
ललकजौतुलसीनितहितहान ६७ जानेजाननजोइयेबि-
नुजानेकोजान ॥ तुलसीयहसुनिसमुझिहियआनिधरे
धनुबान ६८ करमठकठमलियाकहैज्ञानीज्ञानबिहीन ॥
तुलसीत्रिपथबिहायगोरामदुआरेदीन ६६ बाधकसबसब
केभयेसाधकभयेनकोइ ॥ तुलसीरामकृपालतेभलीहोय
सोहोइ १०० शंकरप्रियममद्रोहीशिवद्रोहीममदासतेनर
करहिंकलपभरिघोरनरकमहँबास १०१ बिलगबिलग
सुखसंगदुख जियनमरणसोइरीति ॥ रहेतेराखेरामके
गयेतेउचितअनीति १०२ जायकहबकरतूतिबिनु जाय

योगबिनुक्षेम ॥ तुलसीजाइउपायसब बिनारामपदप्रेम
१०३ लोगमँगतुसबयोगही योगजायबिनुक्षेम ॥ त्यों
तुलसीकेभावगतु रामप्रेमबिनुनेम १०४ रामनिकाईरा-
वरी हैसबहीकीनीक ॥ जोयहसांचीहैसदा तौनीकोतुल-
सीक १०५ तुलसीरामजोआदरो खोटोखरोखरोइ ॥ दी
पककाजरशिरधरो धरोसुधरोधरोइ १०६ तनबिचित्र
कायरबचन अहिअहारमनघोर ॥ तुलसीहरिभयेपक्षधर
तातेकहसबमोर १०७ लहैनफूटीकोड़िहू कोचाहैक्यहि
काज ॥ सोतुलसीमहँगोकियो रामग़रीबनिवाज १०८
घरघरमांगेटूकपुनि भूपतिपूजेपायँ॥तेतुलसीसबरामबि-
नुतेअबरामसहायँ १०९ तुलसीरामसुदीठते निबलहोत
बलवान ॥ बालिबैरसुग्रीवके कहाकियोहनुमान ११०
तुलसीरामहिंतेअधिक रामभक्तजियजान ॥ ऋणियाँरा-
जारामसोधनीभयेहनुमान १११ कियोसोसेवकधर्मकपि
प्रभुकृतज्ञजियजान ॥ जोरिहाथठाढ़ेभये बरदायकबर-
दान ११२ भक्तहेतुभगवानप्रभु रामधरोतनभूप॥ किय
चरित्रपावनपरमप्राकृतनरअनुरूप ११३ ज्ञानगिरागो-
तीतअज मायागुणगोपार सोईसच्चिदानन्दघन करतच-
रित्रउदार ११४ हिरण्याक्षभ्रातासहित मधुकैटभबल-
वान ज्यहिमारेसोअवतर्यो कृपासिन्धुभगवान ११५
शुद्धसच्चिदानन्दमय कन्दभानुकुलकेतु॥ चरितकरतनरअ
नुहरत संसृतसागरसेतु ११६ बालबिभूषणबसनबरधूरि
धूसिरितअङ्ग ॥ बालकेलिरघुबरकरत बालबन्धुसबसङ्ग
११७ अनुदिनअवधबधावने नितनवमङ्गलमोद ॥ कु-

दितमातुपितुलोगलखि रघुवरबालबिनोद ११८ राज
अजिरराजतरुचिर कोशलपालकबाल॥ जानुपाणिचर
चरितबर सगुणसुमङ्गलमाल ११९ नामललितलीलाल
लित ललितरूपरघुनाथ॥ ललितबसनभूषणललितल-
लितअनुजशिशुसाथ १२० रामभरतलक्ष्मणललितशत्रु
शमनशुभनाम॥ सुमिरतदशरथसुवनसब पूजहिंसबमन
काम १२१ बालककोशलपालके सेवकबालकृपाल॥ तु-
लसीमनमानसबसतमङ्गलमञ्जुमराल १२२ भक्तभूमिभू
सुरसुरभि सुरहितलागिकृपाल॥ करतचरितधरिमनुज
तन सुतनमिटहिंजञ्जाल १२३ निजइच्छाप्रभुअवतरइँ
सुरगोद्विजहितलागि॥ सगुणउपाशकसङ्गतहँरहेमोक्षस
बत्यागि १२४ परमानन्दकृपायतन मनपरिपूरणकाम॥
प्रेमभक्तअनपावनीहमहिंदेहुश्रीराम १२५ बारिमथेघृत
होयबरु सिकतातेबरुतेल॥ बिनुहरिभजननभवतरै
यहसिद्धान्तअपेल १२६ हरिमायाकृतदोषगुण बिनुहरि
भजननजाहिँ॥ भजियरामसबकामतजि असबिचारिमन
माहिँ १२७ जोचेतनकहँजड़करै जड़ैकरहिँचैतन्य॥ अ-
ससमर्थरघुनायकहि भजहिँजीवतेधन्य १२८ श्रीरघु-
बीरप्रतापतेसिन्धुतरेपाषान॥ तेमतिमन्दजेरामतजि भज
हिँजायप्रभुआन १२९ लवणमेषपरमानयुग बर्षकल्पशर
चण्ड॥ भजहिनमनत्यहिरामकहँकालजासुकोदण्ड १३०
तबलगिकुशलनजीवकहँसपन्यहुंमनबिश्राम॥ जबलगि
भजतनरामपद शोकधामतजिकाम १३१ बिनुसतसङ्गन
हरिकथा त्यहिबिनुमोहनभाग॥ मोहगयेबिनुरामपद हो

यनहढ़अनुराग १३२ बिनुबिश्वासैभक्तिनहिं त्यहिबिनु द्रवहिँनराम॥ रामकृपाबिनुसपन्यहू जीवनलहबिश्राम १३३ सोरठा॥ असबिचारिमनधीर तजिकुतर्कसंशयसकल॥ भजहुरामरघुबीर करुणाकरसुन्दरसुखद १३४ भावबश्यभगवान सुखनिधानकरुणाभवन॥ तजिममता मदमान भजियसदासीतारमन १३५ कहहिँबिमलमत सन्त वेदपुराणबिचारिसब॥ द्रवैजानकीकन्त तबछूटैसंसारदुख १३६ बिनगुरुहोइनज्ञान ज्ञानकिहोइबिराग बिनु॥ गावहिँवेदपुराण सुखकिलहियहरिभक्तिबिनु १३७ दोहा॥ रामचन्द्रकेभजनबिनु जोचहपदनिर्बान॥ ज्ञानवन्तअपिसोनर पशुबिनपूछबखान १३८ जरोसो सम्पतिसदनसुखसुहृदमातुपितुभाइ॥ससुखहोतजोराम पद करैनसहजसहाइ १३९ सोईसाधसुनिसमुझिकर रामभक्तिथिरताइ॥ लड़िकाईकोपैरिबो तुलसीबिसरिन जाइ १४० सबैकहावतरामके सबहिरामकीआस॥ राम कहैंज्यहिआपनोत्यहिभजुतुलसीदास १४१ ज्यहिशरीर रतिरामसों सोइआदरेसुजान॥रुद्रदेहतजिनेहबशबानर भेहनुमान १४२ जानिरामसेवासरस समुझिकरबअनुमान॥ पुरुखातेसेवकभये हरतेभयेहनुमान १४३ तुलसी रघुबरसेवकहि खलडाँढसमनमाँख॥ बाजराजकेबाल कहि लवादिखावतआँख १४४ रावणरिपुकेदाससों कायरकरहिँकुचालि॥ खरदूषणमारीचज्यों नीचजाहिँगेकालि १४५ पुण्यपापयशअयशके भावीभाजनभूरि॥ सङ्कटतुलसीदासको रामकरहिँगेदूरि १४६ खेलतबालक

ब्यालसँगमेलतपावकहाथ ॥ तुलसीशिशुपितुमातुज्यों राखलसियरघुनाथ १४७ तुलसीदिनभलशाहकहँ भली चोरकहँराति ॥ निशिबासरताकहँभलो मानैरामइताति १४८ तुलसीजनिसुनिसमुझि कृपासिन्धुरघुराज ॥ महँगेमणिकञ्चनकिये सोधोजगजलनाज १४६ सेवाशील सनेहबश सुखदसुयोगबियोग ॥ तुलसीतेसबरामसों सुखदसुयोगबियोग १५० चारिचहतमनसाअगम चनक चारिकोलाहु ॥ चारिपरिहरेचारिको दानिचारिचखचाहु १५१ सुधेमनसूधेबचन सूधीसबकरतूति॥ तुलसीसूधीसकलबिधि रघुबरप्रेमप्रसूति १५२ बिषबिदबोलनिमधुर मनकटुकरहृदयमलीन॥तुलसीरामनपाइयेभयेविषयजल मीन १५३ बचनबेषतेजोबनै सोबिगरैपरिनाम ॥ तुलसी मनतेजोबनैबनीबनाईराम १५४ नीचमीचलैजाइजोराम रजायसुपाइ॥तोतुलसीतेरोभलोनतअनभलोअघाइ १५५ जातिहीनअघजन्ममहि मुक्तिकीनिअसनारि ॥ महामन्द मनसुखचहहिँ ऐसेप्रभुहिबिसारि १५६ बंधुबधूरतक्यहिकियो बचननिरुत्तरबालि ॥ तुलसीप्रभुसुग्रीबकीचितैनकछुकुचालि १५७ बालिबलीबलशालिदल सखाकीन्हकपिराज ॥ तुलसीरामकृपालकोबिरदग़रीबनिवाज १५८कहाबिभीषणलैमिलो कहाबिगारोबालि॥ तुलसी प्रभुशरणागतहि सबदिनआयोपालि १५६ तुलसीकोशलपालसोंकोशरणागतपाल ॥ भजोबिभीषणबंधुभय भंज्योदारिदकाल १६० कुलिशहुचाहिकठोरअति कोमलकुसुमहुचाहि ॥ चितखगेशअसरामकर समुझिपरैक

हुकाहि १६१ बलकलभूषणफलअशनि बिनशय्याद्रुम
प्रीति ॥ तेहिसमयलंकादई यहरघुबरकीरीति १६२
जोसंपतिशिवरावणहिदीनदियेदशमाथ॥ सोइसंपदाबि
भीषणहिसकुचिदीनरघुनाथ १६३ अबिचलराजबिभी
षणहिंदेहिंरामरघुराज ॥ अजहुंबिराजतलंकपरतुलसीस-
हितसमाज १६४ कहाबिभीषणलैमिल्योकहादियोरघु-
नाथ॥तुलसीयहजानेबिनामूढ़मीजिहैंहाथ १६५ बैरि
बंधुनिशिचरअधमतजोनभरेकलंक ॥ झूंठेअथसियपरिह
रीतुलसीसोयअशंक १६६ त्यहिसमाजकियोकठिनपन
जेहितौल्योकैलास ॥ तुलसीप्रभुमहिमाकहौंसेवककोबि
श्वास १६७ सभासभासदनिरखिपटपकरिउठायेहाथ॥
तुलसीकियेइगारहौबसनबेषयदुनाथ १६८ त्राहितीन
कहिद्रोपदीतुलसीराजसमाज॥ प्रथमबढ़ेपटचितबिकल
चहतचकितनिजकाज १६९ सुखजीवनसबकोउचहत
सुखजीवनहरिहाथ॥ तुलसीदातामांगन्योदेखियतअबु
धअनाथ १७० कृपिणदेइपाइयपरोबिनुसाधनसिधिहो
य ॥सीतापतिसम्मुखसमुझिजोकीजैशुभसोइ १७१ दं-
डकबनपावनकरनचरणसरोजप्रभाउ ॥ ऊसरजामहिख
लतरहिहोहिरंकतेराउ १७२ बिनहींऋतुतरुबरुफरहिं
शिलाद्रवहिंजलजोर ॥ रामलषणसियकरिकृपाजबचित
वहिंजेहिओर १७३ शिलासोतियभइगिरितरेमृतकजिये
जगजान ॥ रामअनुग्रहसगुनशुभ सुलभसकलकल्यान
१७४ शिलाशापमोचनचरणसुमिरहुतुलसीदास ॥ तज
हुशोचसंकटमिटहिंपूजहिमनकीआस १७५ मरेजिआये

भालुकपिअवधविप्रकोपूत॥ सुमिरहुतुलसीताहितूजाको
मारुतदूत१७६ कालकरमगुणदोषजगजीवतिहारेहाथ॥
तुलसीरघुबररावरो जानजानकीनाथ १७७ रोगनिकर
तनुजरठपन तुलसीसंगकोलोग॥ रामकृपालयपालिये
दीनपालिबेयोग १७८ मोसमदीननदीनहिततुमसमान
रघुबीर॥ असबिचारिरघुबंशमणि हरहुबिषमभवभीर
१७९ भवभुवंगतुलसीनकुल डसतज्ञानहरिलेत॥ चित्र
कूटएकऔषधी चितवतहोतसचेत १८० हौंहुंकहावतस
बकहत रामसहतउपहास॥ साहबसीतारामसों सेवक
तुलसीदास १८१ रामराजराजतसकल धरमनिरतनर
नारि॥ रागनरोषनदोषदुख सुलभपदारथचारि १८२
रामराजसंतोषसुख घरबनसकलसुपास॥ सुरतरुतरुसुर
धेनुमहि अभिमतभोगबिलास १८३ खेतीबणिबिद्या
बणिज सेवाशिल्पसोकाज॥ तुलसीसुरतरुसरिससब
सुफलरामकेराज१८४ दंडजतिनकरभेदजहं नरतकनृत्य
समाज॥ जीतहुमनहिसुनियअसरामचन्द्रकेराज १८५
कोपेशोचतपोचकर करियनिहारनकाज।तुलसीपरमित
प्रीतिकीरीतेरामकेराज १८६ मुकुरनिरखिमुखरामभ्रू
गनतगुनहिदैदोष॥ तुलसीसेशठसेवकनि लखिजिनप
रहिसरोष १८७ सहसनामसुनिभनितसुनि तुलसीब
ल्लभनाम॥ सकुचतहियहँसिनिरखिसिय धरमधुरंधरराम
१८८ गौतमतियगतिसुरतिकरि नहिंपरसतिपगपानि॥
हियहर्षेरघुबंशमणि प्रीतिअलौकिकजानि १८९ तुलसी
बिलसतनखतनिशि शरदसुधाकरसाथ॥ मुक्ताझालरझलक

कजनुरामसुयशशिशुहाथ १६० रघुपतिकीरतिकामिनी
क्योंकहहैंतुलसीदास ॥ शरदप्रकाशअकाशछवि चारुचि
बुकतिलजास १६१ प्रभुगुणगणभूषणबसन बिशद बिशे-
षसुदेश॥रामसुकीरतिकामिनी तुलसीकरतबकेश १६२
रामचरितराकेशकर सरिससुखदसबकाहु॥सज्जनकुमुद
चकोरचित हितबिशेषबड़लाहु १६३रघुबरकीरतिसज्जन
निशीतलखलनिसुताति ॥ ज्योंचकोरचपचक्कवनि तुलसी
चांदनिराति १६४रामकथामंदाकिनी चित्रकूटचितचारु॥
तुलसीसुभगसनेहबिन सियरघुबीरबिहारु १६५ श्याम
सुरभिपयविशदअति गुनदकरहिंसबपान ॥ गिराग्राम
सियरामयश गावहिंसुनहिसुजान १६६ हरिहरयशसुर
नरगिरन्हवर्णहिसुकविसमाज॥ हाटीहाटकघटितचरुरां-
धस्वादसुनाज १६७तिलपररास्योसकलजग बिदितबि-
लोकतलोग ॥ तुलसीमहिमारामकी कोउनजानिबियोग
१६८ सोरठा॥ बामस्वरूपतुम्हारबचनअगोचरबुद्धिपर॥
अबिगतिअकथअपार नेतिनेतिनितनिगमकह १६६
दोहा॥मायाजीवसुभावगुण कालकरमभहदाद॥ईशअंकते
बढ़तसभ ईशअंकबिनुवाद२०० हितउदासरघुबरबिरह
बिकलसकलनरनारि॥ भरतलषणसियगतिसमुझिप्रभु
चखसदासुबारि २०१ सीयसुमित्रासुवनगति भरतस-
नेहसुभाउ ॥ कहिबेकोशारदसरस जनिबेकोरघुराउ
२०२ जानहिंरामनकहिसके भरतलषनसियप्रीति॥ सो
सुनिसमुझितुलसीकहत हठशठताकीरीति २०३ सब
बिधिसमरथसकलकहिसहिसाँसनदिनराति॥ भलोनि-

बाहोसुनिसमुझि स्वामिधर्म सबभांति २०४ भरतहि होइनराजपद बिधिहरिहरपदपाइ ॥ कबहुंककाजीसी करनि छीरसिंधुबिनसाय २०५ संपतिचकईभरतचक मुनिआयसुखिलवार ॥ तेहिनिशिआश्रमपिंजरा राखेभा भिनुसार २०६ सधनचोरसगमुदितमन धनीगहेज्यों फेट ॥ त्योंसुग्रीवबिभीषणहि भईभरतकीभेट २०७ राम सराहेभरतउठि मिलेरामसमजानि ॥ तदपिबिभीषणकी सपति तुलसीगरनगलानि २०८ भरतश्यामतनराम सम सबगुणरूपनिधान ॥ सेवकसुखदायकसुलभसुमिरत सबकल्यान २०९ लसतलषनमूरतिमधुर सुमिरहुस-हितसनेह ॥ सुखसंपतिकीरतिविजय सगुणसुमंगलगेह २१० नामशत्रुसूदरशुभग सुखमाशीलनिकेत ॥ सेवत सुमिरतसुलभसुख सकलसुमंगलदेत २११ कौशल्याक-ल्याणमय मूरतिकरतप्रणाम ॥ शकुनसुमंगलकाजशुभ कृपाकरहिंसियराम २१२ सुमिरिसुमित्रानामजगजेति यलेहिंसुनेम ॥ सुवनलषनरिपुदमनसे पावहिंपतिपद प्रेम २१३ सीताचरणप्रणामकरि सुमिरिसुनामसुनेम ॥ सोतियहोहिपतिदेवता प्राणनाथप्रियप्रेम २१४ तुलसी केवलकामतरु रामचरित्रअराम ॥ कलितरुकपिनिश्चर कहतहमहिंकियेबिधिबाम २१५ मातुसकलसानुजभरत गुरुपुरलोगसुभाउ ॥ देखतदेखतकेकईहि लंकापतिकपि राउ २१६ सहजसरलरघुबरबचन कुमतिकुटिलकरि जान ॥ चलेजोंकजलबक्रमति यद्यपिसलिलसमान २१७ दशरथनामसुकामतरु फलैसकलकल्याण ॥ धरणिधाम

धनधरमसुत सदगुणरूपनिधान २१८ तुलसीजान्यो
दशरथहि धर्मनसत्यसमान ॥ रामतजेज्यहिलागिवत
आपुपरिहरेप्रान २१९ रामबिरहदशरथमरण मुनिमन
अगमसुमीचु॥तुलसीमंगलमरणतरुशुचिसनेहजलसींचु
२२०॥सोरठा॥जीवनमरणसनाम जैसेदशरथरायको॥
जियतखिलायेरामरामबिरहतनपरिहरेउ२२१॥दोहा॥
प्रभुहिविलोकतगीधगत सियहितघायलनीचु॥तुलसी
पाईगीधपति मुक्तिमनोहरमीचु २२२ बिर्तकर्मरतभरत
मुनिसिद्धऊंचअरुनीच॥ तुलसीसकलसिंहातसुनि गीध
राजकीमीचु२२३ मुयेमरतमरिहैंसकलघरीपहरकेबीच॥
लहीनकाहूआजलौं गीधराजकीमीच २२४ मुयेमुक्तजी-
वतमुकतमुकतमुकतहूंबीच॥ तुलसीसबहीतेअधिक गीध
राजकीमीच २२५ रघुबरबिकलबिहंगलखि सोबिलोकि
दोउबीर॥ सियसुधिकहिसियरामकहि तजीदेहमतिधीर
२२६ दशरथलेदशगुणभगतिसहेतासुकरकाजु॥ शोचत
बंधुसमेतप्रभुकृपासिंधुरघुराजु २२७ केवटनिशिचरबि
हँगमृग कियेसाधुसनमानि॥ तुलसीरघुबरकीकृपा स
कलसुमंगलखानि २२८ मंजुलमंगलमोदमयमूरतिमा
रुतपूत॥ सकलसिद्धकरकमलतल सुमिरतरघुबरदूत
२२९ धीरबीररघुबीरप्रिय सुमिरिसमीरकुमार॥ अगम
सुगमसबकाजकर करतलसिद्धिबिचार २३० सुखमुद
मंगलकुमुदबिधु सगुणसरोरुहभानु॥ करहुकाजसबसि
द्धिशुभ आनिहियेहनुमानु २३१ सकलकाजशुभसमउ
भल सगुणसुमंगलजानु॥ कीरतिबिजयबिभूतिभलि

हियहनुमानहिआन २३२ शूरशिरोमणिसाहसी सुमति समीरकुमार ॥ सुमिरतसबसुखसंपदा मुदमंगलदातार २३३ तुलसीतनुसरसुखजलज भुजरुजगजबरजोर ॥ दलतदयानिधिदेखिये कपिकेशरीकिशोर २३४ भुजतरु कोटररोगअहि बरबशकियोप्रवेश ॥ बिहँगराजबाहनतुर तकाढ़ियमिटैकलेश २३५ बाहुबिटपसुखबिहँगथलल्लगी कुपीरकुआगि ॥ रामकृपाजलसींचियेबेगिदीनहितलागि २३६ ॥ सोरठा ॥ मुक्तिजन्ममहिजानि ज्ञानखानिअघ हानिकर ॥ जहँबसशंभुभवानिसोकाशीसेइयकसन २३७ जरतसकलसुरवृंद बिषमगरलजेहिपानकिय ॥ तेहिनभ जसिमतिमंद कोकृपालशंकरसरिस २३८॥दोहा॥बासर ठासनिकेठका रजनीचहुंदिशिचोर ॥ शंकरनिजपुरराखिये चितैसुलोचनकोर २३९ अपनीबीसोआपुहा पुरिहिल गायेहाथ ॥ क्यहिबिधिबिनतीबिश्वकी करैबिश्वकेनाथ २४० औरकरैअपराधकोउ औरपावफलभोग ॥ अति बिचित्रभगवंतगति कोउनजानिबेयोग २४१ प्रेमसरी परपँचरुज उपजीअधिकउपाधि ॥ तुलसीभलो सुबेदई बेगिबांधियेब्याधि २४२ हमहमारआचारबड़ भूरिभारि धरशीश ॥ हठिशठपरवशपरतजिमि कीरकोशकृमिकीश २४३ क्यहिमगप्रबिशतजातिकेहि ज्योंदर्पणमेंछांह ॥ तुलसीत्योंजगजीवगति करीजीहकेनांह २४४ सुखसा- गरसुखनीदबश सपनेसबकरतार ॥ मायामायानाथकी कोजगजाननहार २४५ जीवसीवसमसुखशयन सपने कछुकरतूति॥ जागतदीनमलीनसोइ बिकलबिषादबिभूति

२४६ सपनेहोयभिखारनृप रंकनाकपतिहोय॥ जागे
लाभनहानिकछु तिमिप्रपंचजियजोय २४७तुलसीदेखत
अनुभवत सुनतनसमुझतनीच॥ चपरिचपेटेदेतनित केश
गहेकरमीच २४८ करमखरीकरमोहथल अंकचराचर
जाल॥ हनतगनतगनिगुणिहनत जगतजोतिषीकाल
२४९ कहिबेकहँरसनारची सुनिबेकहँकियकान॥ धरिके
चितहितसहितसुनि परमारथहिसुजान २५० ज्ञानकहैं
अज्ञानबिन तमबिनुकहैंप्रकाश॥ निरगुणकहैंजोसगुण
बिनु सोगुरुतुलसीदास २५१ अंकअगुणआखरसगुण
समुझिउभयआपार॥ खोयराखेआपभल तुलसीचारुबि-
चार२५२परमारथपहिंचानिमतिलसतिविषयलपटानि।
निकसिचितातेअधजरति मानहुसतीपरानि २५३ शीश
उघारनकिनकहेउ बरजिरहेप्रियलोग॥ घरहींसतीकहा
वती जरतीनाहिंबियोग २५४ खरिआखरीकपूरसब उ
चितनपियतियत्याग॥ कैखरिआमोहिंमेलिकै बिमलबि
बेकबिराग २५५ घरकीन्हेघरुजातहै घरछांड़ेघरजाइ॥
तुलसीघरबनबीचही रामप्रेमपुरछाइ २५६ दियेपीठि
पाछेलगै सम्मुखहोतपराय॥ तुलसीसंपतिछांहज्यों ल
खिदिनबैठिगँवाय २५७ तुलसीअदभुतदेवता आशादे
वीनाम॥ सेयेशोकसमर्पई बिमुखभयेअभिराम २५८
सोईसेंबरटेसुवा सेवतसदाबसंत॥ तुलसीमहिमामोहकी
सुनतसराहतसंत २५९ करतनसमुझतझूंठगुण सुनतहो
तमतिरंक॥ पारदप्रकटप्रपंचमय सिद्धिहिनाउकलंक
२६० ज्ञानीतापसशूरकबि कोबिदगुणआगार॥ केहिके

लोभबिडंबना कीन्हनयहिसंसार २६१ श्रीमंदबक्रनकी
नकेहि प्रभुताबधिरनकाहि ॥ मृगनैनीकेनयनशर कोअ
सलागिनजाहि २६२ ब्यापिरहेउसंसारमहंमायाकटक
प्रचंड ॥ सेनापतिकामादिभट कपटदंभपाषंड २६३ ता
ततीनिअतिप्रबलखल कामक्रोधअरुलोभ ॥ मुनिबिज्ञान
सुधाममन करहिंनिमिषमहंक्षोभ २६४ लोभकेइच्छादं
भबल कामकेकेवलनारि ॥ क्रोधकेपुरुषबचनबल मुनिब
रकहहिंबिचारि २६५ कामक्रोधलोभादिमद प्रबल
मोहकेधारि ॥ तिनमहंअतिदारुणदुखद मायारूपीनारि
२६६ कानहिंपावकजरिसकै कानसमुद्रसमाइ ॥ कान
करैअबलाप्रबल क्यहिजगकालनखाइ २६७ जन्मपत्रि
काबर्त्तिकै देखहुमनहिंबिचारि ॥ दारुणबैरीमीचुके बीच
बिराजतिनारि २६८ दीपशिखासमयुवतिरस मनजनि
होसिपतंग ॥ भजहिरामतजिकाममद करहिंसदासतसं
ग २६९ कामक्रोधमदलोभरत गृहाशक्तदुखरूप ॥ तेकि
मिजानहिंरघुपतिहि मूढ़परेतमकूप २७० गृहगृहीतपु
निबातबश त्यहिपुनिबिच्छीमार ॥ ताहिपियाईबारुणी
कहहुकौनउपचार २७१ ताहिकिसंपतिसगुणशुभ सप
नेहुमनबिश्राम ॥ भूतद्रोहरतमोहबश रामबिमुखरतिका
म २७२ कहतकठिनसमुझतकठिन साधनकठिनबिबेक ॥
होइघुनाक्षरन्यायज्यों पुनिप्रत्यूहअनेक २७३ खलप्रबो
धजगशोधमन कोनिरोधकुलशोध ॥ करहिंतेफोकटपचि
मरहिं सपनेहुसुखनसुबोध २७४॥ सोरठा॥ कोउबिश्रा
किपावतातसहजसंतोषबिनु ॥ चलैकिजलबिनुनावको

टियतनपचिपचिमरै २७५ सुरनरमुनिकोउनाहिं जेहि
नमोहमायाप्रबल॥असबिचारिमनमाहिंभजियमहामाया
पतिहि २७६ ॥ दोहा ॥ एकभरोसेएकबल एकआशबि
श्वास ॥ एकरामघनश्यामहित चातकतुलसीदास २७७
जोघनबरषैसमयशिर जोभरिजन्मउदास ॥ तुलसीयाच
कचातकहि तऊतिहारीआस २७८ चातकतुलसीकेमते
स्वातिहुपियैनपानि ॥ प्रेमतृषाबाढ़तभला घटेघटैगीका
नि २७९ रटतरटतरसनालटी तृषासूखिगइअंग ॥ तुल
सीचातकप्रेमको नितनूतनरुचिरंग २८० चढ़तनचातक
चितकबहुं प्रियपयोदकेदोष ॥ तुलसीप्रेमपयोधिकी ताते
नापनजोष २८१ बरषिपरुषपाहनपयदपंखकरौटुकटूक॥
तुलसीपरानचाहिये चतुरचातिकहिचूक २८२ उपलबर
षिगरजततरजि डारतकुलिशकठोर ॥ चितौकिचातकमे
घतजि कबहुंदूसरीओर २८३ पबिपाहनदामिनिगरज
झरिझकोरखरिझीझि ॥ रोषनप्रीतमदोषलखि तुलसी
रामहिरीझि २८४ मानराखिबोमांगिबो पियसोनितन
वनेहु॥ तुलसीतीनिउतबफबें जोचातकमतिलेहु २८५तु
लसीचातिकहीफबैमानराखिबोप्रेम॥ बक्रबूंदलखिस्वाति
हू निदरिनिबाहतनेम २८६ तुलसीचातकमांगनो एकर
धनिदानि॥ देतजोभूभाजनभरतलेतजोघूटकपानि २८७
तीनिलोकतिहुंकालमें चातकहीकेमाथ॥ तुलसीजासुनदी
नता सुनीदूसरेनाथ २८८ प्रीतिपपीहापदकी प्रकटनई
पहिंचानि ॥ याचकजगतिकनाउड़ी कियोकनौड़ोदानि
२८९ नहिंयाचतजलसंग्रही शीशनाइमहिलेइ ॥ ऐसेमा

निहिमांगनेहि कोबारिदबिनदेइ २९० किनकिनज्या
योजगतमें जीवनदायकदानि ॥ भयोकनौड़ोयाचकहि प
यदप्रेमपहिचानि २९१ साधनसांसतसबसहत सबहिं
सुखदफललाहु ॥ तुलसीचातकजलधिकी रीतिबूझिबुध
काहु २९२ चातकजीवनदायकहि जीवनसमयसरीत ॥
तुलसीअलखनलखिपरै चातकप्रीतिप्रतीति २९३ जीव
चराचरजहंलगे हैसबकोहितमेह ॥ तुलसीचातकमनब
स्यो घनसोसहजसनेह २९४ डोलतबिपुलबिहंगबनपि
यतपोषरिनबारि ॥ सुयशधवलचातकनवल तुहीभुवनद
शचारि २९५ मुखमीठमानसमलिन कोकिलमोरचकोर॥
सुयशधवलचातकनवल रहेउभुवनभरितोर २९६ बास
बेषबोलनिचलनि मानसमंजुमराल ॥ तुलसीचातकप्रेम
की कीरतिबिशदबिशाल २९७ प्रेमनपरखियपुरुषपन
पयदसिखावनएह ॥ जगकहैचातकपातकी ऊसरबरषैमेह
२९८ होइनचातिकपातकी जीवनदानिनमूढ़ ॥ तुलसी
गतिप्रहलादकी समुझिप्रेमपथगूढ़ २९९ गरजआपनी
सबनको गरजकरतउरआनि ॥ तुलसीचातकचतुरभोया
चकजानिसुदानि ३०० चरगचंगुगतचातिकहि नेमप्रेम
कीपीर ॥ तुलसीपरबशहाड़पर परिहैपुहमीनीर ३०१
बंध्योबधिकपर्योपुण्यजल उलटिउठाईचोंच तुलसीचा
तिकप्रेमपटमरतहुलगीनखोंच ३०२ अंडफोरिकियोचेटु
तुव पूरोनीरनिहारि ॥ गहिचंगुलचातिकचतुर डार्यो
बाहिरबारि ३०३ तुलसीचातिकदेतशिख सुतहिबारही
बार ॥ तातनतर्पणकीजिये बिनाबारिधरधार३०४॥ सो

रठा॥ जियतननाईनारि चातकघनतजिदूसरहि॥ सुरस
रिहूंकीबारि मरतमांगेउअरधजल ३०५ सुनरेतुलसी
दास प्यासपपीहहिप्रेमको॥ परिहरिचारिउमास जोअ
चवैजलस्वातिको ३०६ याचैबारहमास पियैपपीहास्वा
तिजल॥ जान्योतुलसीदास जोगवतनेहीनेहमन ३०७॥
दोहा॥ तुलसीकेमतचातिकहि केवलप्रेमपियास॥ पियत
स्वातिजलजानजग याचकबारहमास ३०८ आलबाल
मुक्ताहलनिहियसनेहतरुमूल॥ होइहेतुचितचातकहि
स्वातिसलिलअनुकूल ३०९ बिबिरसनीतनश्यामहैबंक
चलनिबिषखानि॥ तुलसीयशश्रवणनसुन्यो शीशसमर
प्योआनि ३१० उष्णकालअरुदेहषित मगपंथीतनऊख
चातकबतियांनारुचे अनजलसींचेरूख ३११ अनजल
सींचेरूखकी छायातेबरुघाम॥ तुलसीचातिकबहुतहैयह
प्रबीनकोकाम ३१२ एकअंगजोसनेहता निशिदिनचा
तिकनेह॥ तुलसीजासोंहितलगै वहिअहारवोदेह ३१३
आपुब्याधकोरूपधरि कुहोकुरंगहिरागु॥ तुलसीजोमृग
मनमुरै परैप्रेमपटदागु ३१४ तुलसीमननिजद्युतिपुनहि
ब्याधहिदेउदिखाय॥ बिछुरतहोइनआंधरो तातेप्रेमन
जाय ३१५ जरततुहिनलखिबनजबन रबिदैपीठिपराउ॥
उदयबिकशअथवतसकुच मिटैनसहजसुभाउ ३१६ देउ
आपनेहाथजल मीनहिमाहुरघोरि॥ तुलसीजियजोबारि
बिनु तौतुदेहिकबिखोरि ३१७ मकरउरगदादुरकमठ
जलजीवनजलगेह॥ तुलसीएकैमीनके हैसांचिलोसनेह
३१८ तुलसीमिटैनमरिमिटेहु सांचोसहजसनेहु॥ मोर

सिखावनमूरहूं गरजतपलुहतमेहु ३१६ सुलभप्रीतिप्रीतमसबै कहतकरतसबकोइ ॥ तुलसीमीनपुनीततें त्रिभुवनबड़ोनकोई ३२० तुलसोजपतपनेमव्रत सबसबहींते होइ ॥ लहैबड़ाईदेवता इष्टदेवजबहोइ ३२१ कुदिनहितूसोहितसुदिन हितअनहितकिनहोइ ॥ शशिछबिहररबिसदनतउ मित्रकहतसबकोइ ३२२ कैलघुकैबड़मीतभलसमसनेहदुखसोइ॥तुलसीज्योंघृतमधुसरिस मिलैमहाबिषहोइ३२३ मान्यमीतसोंसुखचहैं सोनछुयेछलछांह॥ शशित्रिशंकुकेकईगति लखितुलसीमनमांह ३२४ कहीकठिनकृतकोमलहु हितहठिहोइसहाइ ॥ पलकपानिपरओड़िअत समुझिकुघाइसुधाइ ३२५ तुलसीबरैसनेहदोउ रहितबिलोचनचारि ॥ सुरहिंसेवयेआदरहिं नींदहिसुरसरिबारि ३२६ रुचैमांगनेहिमांगिबोतुलसीदानहिदानु ॥ आलसअनखनआचरज प्रेमपिहानीजानु ३२७ अमियगारिगारेउगरल मारिकरीकरतार ॥ प्रेमबैरकीजननियुग जानहिबधनगँवार ३२८ सदानजेसुमिरतरहहिं मिलिनकहैंप्रियबैन ॥ तेपंतिन्हकेजायघर जिनकेहियेनननैन ३२६ हितपुनीतसब स्वारथहि अरिअशुद्धबिनुचाड़ ॥ निजमुखमानिकसमदशन भूमिपरेतेहाड़ ३३० माखीकाकउलूकबक दादुरसेभयेलोग॥ भलेतेशुकपिकमोरसे कोउनप्रेमपथयोग ३३१ हृदयकपट बरबेषधर बचनकहैंगढ़िछोलि ॥ अबकेलोगमयूरज्यों क्योंमिलियेमनखोलि३३३ चरणचोंचलोचनरँगो चलीमरालीचाल॥छीनिनीरबिबरनसबै बकउघरततेहिकाल

३३३ मिलोजोसरलहिसरलहै कुटिलनसहजबिहाइ ॥ शीशहेतुज्योंबक्रगति ब्यालनबिलेसमाइ ३३४ कृसधन सखहिनदेवदुख मुयहुनमांगबनीच ॥ तुलसीसज्जनकी रहनि पावकपानीबीच ३३५ संगसरलकुटिलहिभये हरिहरकरहिं निबाहु ॥ ग्रहगनतीगतिचतुरविधि कियो उदरबिनुराहु ३३६ नीचनिचाईनहिं तजैसज्जनहूके संग ॥ तुलसीचंदनबिटपबसि बिनबिषभयेनभुअंग ३३७ भलोभलाईपैलहैं लहैंनिचाईनीच ॥ सुधासरा हीअमरता गरलसराहीमीच ३३८ मिथ्यामाहुरसज्ज नहि खलहिगरलसमसाँच ॥ तुलसीछुवतपरायज्यों पारदपावकआँच ३३९ संतसंगअबबर्गकर कामीभवकर पंथ॥ कहहिंसाधुकबिकोविद श्रुतिपुराणसबग्रंथ ३४० सुकृतनसुकृतीपरिहरै कपटनकपटीनीच ॥ मरतसिखा-वनसादियो गीधराजमारीच ३४१ सुतरुसुजनबनऊष सम खलटँकिकारूखान ॥ परहितअनहितलागिसब सां-सतिहँसतिसमान ३४२ पिअहिसुमनरस अलिविटप काटिकोलिफलखात ॥ तुलसीतरुजीवैयुगुल सुमतिकुम तिकीबात ३४३ अवसरकौड़ीजोचुकैबहुरिदियेकालाख॥ दुइजनचांद्रादेखियेउदयकहाभरिपाख ३४४ ज्ञानअन भलोकोसबहि भलोभलेहूकाउ ॥ सींगसूंड़रदमूलनख करतजीवजड़घाउ ३४५ तुलसीजगजीवनअहितकतहूं कोउहितजानि ॥ शोषकभानुकृशानुमहि पवनएकघन दानि ३४६ सुनियसुधादेखीगरल सबकरतूतिकराल ॥ जहँतहँकाकउलूकबक मानससुकृतमराल ३४७ जलचर

थलचरगगनचर देवदनुजनरनाग ॥ उत्तममध्यमअधम खल दशगुणबढ़तबिभाग ३४८ बलिमिसदेखेदेवता करमिसमानवदेव ॥ मुयेमारअबचारहत स्वारथसाधनहेत ३४९ सुजनकहतभलपोचपथ पायनपरखेभेद ॥ कर्मनाशसुरसरितमिस बिधिनिषेधबदवेद ३५० मनिभजनमधुपारई पूरणअमीनिहारि ॥ काछांड़ियकासंग्रही कहहुबिवेकबिचारि ३५१ उत्तममध्यमनीचगति पाहनशिकतापानि ॥ प्रीतिपरीक्षातिहुंनको बैरबितिक्रमजानि ३५२ पुण्यप्रीतिपतिप्रापतिउपरमारथपथपांच॥लखहिं सुजनपरिहरहिंखल सुनहुसिखावनसांच ३५३ नीचनिरादरऊंचके आदरसुखदबिशाल ॥ कदलीबदलीबिटपगतिपेखहुपनशरसाल ३५४ तुलसीअपनोआचरणभलो नलागतकासु ॥ तेहिनबसातजोखाततनित लहसुनहूको बासु ३५५ बुधसोंबिवेकीबिमलमति जेहिकेरोषनराग ॥ सुहृतसराहतसाधुजेहि तुलसीताकोभाग ३५६ आपुआपु कहंसबभलो आपनकहंकोइकोइ ॥ तुलसीसबकहंजोभलो सुजनसराहियसोइ ३५७ तुलसीभलोसुसंगते पोचकुसंगतिहोइ ॥ नाउकिन्नरीतीरअसि लाहबिलोकहुलोइ ३५८ गुनसंगतिगुरुहोइसो लघुसंगतिलघुनाम ॥ चाररपदारथमेंगनै नर्कद्वारहूकाम ३५९ तुलसीगुरुलघुता लहत लघुसंगतिपरिनाम॥ देवीदेवपुकारियतनीचनारिनरनाम ३६० तुलसीकियेकुसंगथितिहोइदाहिनोबाम॥ कहिसुनि सकुचिय सूमखल गतहर शंकरनाम ३६१ बसिकुसंगचहंसुजनता ताकीआशनिरास ॥ तीरथहूको

नामभो गयामाहकेपास ३६२ रामकृपातुलसीसुलभ गंगसुसंगसमान ॥ योजनपरैजोजनमिलै कीजैआपुस नान ३६३ ग्रहभेषजजलपवनपट पाइकुयोगसुयोग ॥ होइकुबस्तुसुबस्तुजग लखहिंसुलक्षणलोग ६३४ जन्म योगमैंजानियत जगबिचित्रगतिदेखि ॥ तुलसीआख रअंकरस रंगेबिभेदबिशेखि ३६५ आखरजोरिबि चारकरु सुमतिअंकलिखिलेखु ॥ योगकुयोगसुयोगमय जगगतिसमुझिबिशेखु ३६६ करुबिचारचलुसुपथभल आदिमध्यपरिनाम ॥ उलटेजपेजेरामरा सूधेराजाराम ३६७ होइभलेकेअनभलो होयदानिकेसूम ॥ होइकपूत सपूतके ज्योंपावकमेंधूम ३६८ जड़चेतनगुणदोषमयबि- श्वकीन्हकरतार ॥ संतहंसगुणगहहिंपै परिहरिबारि बिकार ३६९ ॥ सोरठा ॥ पाटकीटतेहोइ तातेपाटम्बररु चिर ॥ कृमिपालैसबकोइ परमअपावनप्राणसम ३७० ॥ दोहा ॥ जोजोजेहिजेहिरसमगनतहँसोंमुदितमुनिमानि ॥ रसगुणदोषबिचारिबो रसिकरीतिपहिंचानि ३७१ सम प्रकाशतमपाखदुहु नामभेदबिधिकीन्ह ॥ शशिपोषक शोषकसमुझि जगयशअपयशदीन्ह ३७२ लोकवेदहूं लौंदगा नामभलेकोपोच ॥ धर्मराजयमराजपबि कहत सकोचनशोच ३७३ बिरुचिपरखियहसुजनजन राखि परखियहिमंद ॥ बड़वानलशोषतउदधि हर्षबढ़ावतचंद ३७४ प्रभुसम्मुखभयनीचनर निपटभयेबिकराल ॥ रबि रुखलखिदर्पणफटिक उगिलतज्वालाजाल ३७५ प्रभु समीपगतसुजनजन होतसुखदसोबिचारि ॥ लवणजल-

धिजीवनजलद वर्षतसुधासवारि ३७६ नीचनिरावहिं निरसतरु तुलसीसींचहिंऊख॥ पोषतपयदसमानसब बिषपियूषकेरूख ३७७ बरषिबिश्वहर्षितकरत हरत तापअघप्यास॥ तुलसीदोषनजलदको जोजलजरैजवास ३७८ अमरदानियाचकमर्राहं मरिमरिफिरिफिरि लेहिं॥ तुलसीयाचकपातकी दातहिदूषनदेहिं ३७९ लखिगयंदलैचलहिंभजि श्वानसुखानोहाड़॥ गजगुणमोलअहारबल महिमाजानकिराड़ ३८० कैनिदरहुकैआदरहु सिंहहिश्वानसियार॥ हरषिबिषादनकेशरहि कुंजरगजनिहार ३८१ ठाढ़ोद्वारनदेसकै तुलसीजेनरनीच॥निन्दहिंबलिहरिचंद्रकोकाकियोकरणदधीच ३८२ईशशीशबिलसतबिमल तुलीतरलतरंग॥ श्वानसरावककेकहे लघुतालहैनगंग ३८३ तुलसीदेवलादेवकी लागेलाखकरोरि॥काकअभागेहगिभर्यो महिमाभईकिथोरि ३८४ निजगुणघटतननागनग परखिपरोहतकोल॥ तुलसीप्रभुभूषणकिये गुंजाबढ़ैनमोल ३८५ एकापतिषोड़शउअहिं तारागणससुदाइ॥ सकलगिरिन्हदवलाइये बिनुरबिरातिनजाइ३८६ भलोकहैबिनजानिहूंबिनुजाने अपबाद॥ तेनरगाडुरजानिजिय करियनहर्षबिषाद ३८७ परसुखसंपतिदेखिसुख जरहिंजेजड़बिनुआगि॥ तुलसीतिनकेभागते चलैभलाईभागि ३८८ तुलसीजेकीरतिचहहिं परकोकीरतिखोइ॥ तिनकेमुँहमसिलागिहैमिटिहिनमरिहैधोय ३८९ तनुगुणधनमहिमाधरम तेहिबनुजोअभिमान॥तुलसीजियतबिडंबना परिनामहि

गतजान ३६० सासुससुरगुरुमातुपितु प्रभुभयोचहैंसब कोइ॥होनोदूजीओरको सुजनसराहियसोइ ३६१ शठ सहिसांसतिपतिलहत सुजनकलेशनकाय ॥ गढ़िगुढ़ि पाहनपूजिये गंडकिशिलासुभाय ३६२ बड़ेबिबुधदर बारते भूमिभूपदरवार॥ जापकपूजकपेखियत सहतनि रादरभार ३६३ बिनुप्रपंचछलभीखभलि लहियनकि येकलेश ॥ बावनबलिसोंछलकियो दियोउचितउपदेश ३६४भलोभलेसेछलकिये जन्मकनोड़ोहोइ॥श्रीपतिशिर तुलसीलसति बलिबावनगतिसोइ॥ ३६५ बिबुधकाज बावनबलिहि छलोभलोजियजानि ॥ प्रभुतातजिबशभे तदपिमनकीगईनग्लानि ३६६ सरलबक्रगतिपंचग्रहच परिनचितवतकाहु ॥ तुलसीसूधेशूरशशि समयबिडंबित राहु ३६७ खलउपकारबिकारफल तुलसीजानजहान॥ मेंडुकमरकटबनिकबक कथासत्यउपखान ३६८ तुलसी खलबानीमधुर सुनिसमुझियहियहेरि ॥ रामराजबाधक भई मूढ़मंथराचेरि ३६६ जोंकसूधिमनकुटिलगति खल बिपरीतिबिचारु॥ अनहितसोंनितसोखसो सोहितशो-पनहारु ४०० नीचगुणीज्योंजानिबो सुनिलखितुलसी दास ॥ ढीलिदियोगिरिपरतमहि खैंचतचढ़तअकास ४०१भरदरबरषतकोसशत बचैंजेबूंदबराइ॥तुलसीत्यों खलबचनशरहियेगयेनपराइ४०२ पेरतकोल्हूमलितिल तिलीसनेहीजानि ॥ देखिप्रीतिकीरीतियह अबदेखोबर सानि ४०३ सहबासीकाचोगिलहि पुरजनपाकप्रबीन॥ कालक्षेपकेहिमिलकरहिं तुलसीखगमृगमीन ४०४

जासुभरोसेसोइये राखिगोदपरशीश ॥ तुलसीतासुकुचालते रखवारोजगदीश ४०५ मारिखोजलहिसोहकरि करिमतलाजनत्रास ॥ मुयेनीचतेमीचबिनु जेइनकेबिश्वास ४०६ परद्रोहीपरदाररत परधनपरअपराध ॥ तेनर पांवरपापमय देहधरेमनुजाद ४०७ बचनबेषक्योंजानिये मनमलीननरनारि ॥ सूर्पणखामृगपतना दशमुखप्रमुखबिचारि ४०८ हँसनिमिलनिबोलनिमधुर कटुकरतबमनमाँह ॥ छुअतजेसकुचैसुमतिसो तुलसीतिन्हकीछांह ४०६ कपटसारसूचीसहस बांधिबचनपरवास ॥ कियोदुराउचहैंचातुरी सोशठतुलसीदास ४१० बचनबिचारअचारतन मनकरतवछलछूति ॥ तुलसोक्योंसुखपाइये अंतर्यामिहिधूति ४११ शारदूलकोखांगकर कूकरकीकरतूति ॥ तुलसीतापरचाहिये कीरतिबिजयबिभूति४१२ बड़ेपापबाढ़ेकिये छोटेकियेलजान ॥तुलसोतापरसुखचहत बिधिसोंबहुतरिसात ४१३ देशकालकरताकरम बचनबिचारबिहीन ॥ तेसुरतरुतरदारिदी सुरसरितीरमलीन ४१४ साहसहीशिखकोपवस किये कठिनपरिपाक ॥ शठसंकटभाजनभये हठिकुजातिकपिपाक ४१५ राजकरतबिनुकाजही करैकुचालिकुसाज ॥ तुलसीतेदशकंधज्यों जैहैंसहितसमाज ४१६ राजकरतबिनुकाजही ढठहिजेकूरकुठाट॥ तुलसीतेकररा जज्योंजैहैंबारहबाट४१७सभासुयोधनकीसकुनि सुमतिसराहनयोग ॥द्रोणबिदुरभीषमहरिहि कहैंप्रपंचीलोग४१८ पंडुसुवनकीसदसतें नीकोरिपुहितजानि ॥ हरिहरसमसबमा

नियत मोहजानकीबानि ४१६ हितपरबढ़ैबिरोधजब अ
नहितपरअनुराग ॥ रामबिमुखबिधिबामगति सगुणअ
घायअभाग ४२० सहजसुहृदगुरुस्वामिशिख जोनकरै
शिरमानि ॥ सोपछतायअघायउर अबहिंहोइहितहानि
४२१ भरुहायेनटभाटके चपरिचढ़ेसंग्राम॥कैवैभाजैआयहैं
कैबाँधेपरिनाम ४२२ लोकरीतिफूटीसहैं आंजीसहैनको
इ ॥ तुलसीजोआंचीसहैसोआँधरोनहोइ ४२३ भानेभल
आड़ेहुभलोभलोनघालेघाउ॥ तुलसीसबकेशीशपर रखवा
रोरघुराउ ४२४ सुमतिबिचारहिंपरिहरहिंदलसुमनहुंसं
ग्राम ॥सकुलगयेतनुबिनुभये साखीजादोकाम४२५कल
हनजानबछोटकरि कलहकठिनपरिणाम॥ लगतिअगिन
लघुनीचगृह जरतधनिकधनधाम ४२६ रोषक्षमाकेदोष
गुण सुनिमनुभानहिशीख ॥ अबिचलश्रीपतिहरिभये
भूसुरलहैनभीख ४२७ कौरवपांडवजानिये क्रोधक्षमाके
सीम ॥ पांचहिमारिनसैसकै सयोसंहारेभीम ४२८ बोल
नमोटेमारिये मोटीरोटीमारु ॥ जीतिसहजसमहारिबो
जीतेहारिनिहारु ४२९ जोपरिपायँमनाइये तासोंरूठि
बिचारि ॥ तुलसीतहांनजीतिये जहँजीतेहैहारि ४० जूझे
तेभलबूझिबो भलीजीतितेहारि ॥ डहकेतेडहकाइबोभलो
जोकरियबिचारि ४३१ जारिपुसोंहारेहुहँसी जितेपाय
परितापु ॥ तासोंरारिबिचारिये समयसम्हारैआपु४३२
जोमधुमरैनमारिये माहुरदेइजोकाउ ॥ जगजीतेहारेपर
सुहारजितेरघुराउ ४३३ बैरमूलहरहितबचन प्रेममूल
उपकार ॥ दोहाशुभसंदोहसी तुलसीकियेबिचार ४३४

रोषनरसनाखोलिये बरुखोलियतरवारि ॥ सुनतमधुरप
रिणामहित बोलियबचनबिचारि ४३५ मधुरबचनकटु
बोलिबो बिनुश्रमभागअभाग ॥ कुहूकुहूकलकंठरव का
काकररतकाग ४३६ पेटनफूलतबिनुकहे कहुतनलागेढे
रु ॥ सुमतिबिचारेबोलियेसमुझिकुफेरसुफेरु ४३७ छि
द्योनतरुणिकटाक्षशर करेउनकठिनसनेहु ॥ तुलसीतिन
कीदेहकीजगतकवचकरिलेहु ४३८ शूरसमरकरणीक
रहिँ कहिनजनावहिंआपु ॥ बिद्यमानरणपायरिपु कायर
करहिंप्रलापु ४३९ बचनकहैअभिमानके पारथपेखतुसेतु
प्रभुतियलूटतनीचनर जयनमीचुतेहिहेतु ४४० रामलष
णबिजयीभये ननहुगरीबनिवाज॥ मुखरबालिरावणगये
घरहीसहितसमाज ४४१ खगमृगमीतपुनीतकिय बनहु
रामनयपाल ॥ कुमतिबालिदशकंठघरसुहृदबंधुकियेकाल
४४२ लखयअघानेभूखज्यों लखैजीतिमेंहारि ॥ तुलसी
सुमतिसराहिये मगपगधरैबिचारि४४३ लाभसमयको
पालिबो हानिसमयकीचूक ॥ सदाबिचारहिंचारुमति सु
दिनकुदिनदिनदूक ४४४ सिंधुतरण कपिगिरिहरण
काजसाइँहितदोउ ॥ तुलसीसमयहिसमबड़ो बूझतकहँ
कोउकोउ ४४५ तुलसीमीठेअमीते मांगीमिलैजोमीचु॥
सुधासुधाकरसमयबिनु कालकूटतेनीचु ४४६ तुलसीअ
समयकोसखा धीरजधर्मबिवेक ॥ साहितसाहससत्यब्रत
रामभरोसोएक ४४७ समरथकोउनरामसों सीयहरण
अपराधु॥समयहिसाधेकाजसबसमयसराहहिंसाधु४४८
तुलसीतीरहुकेचलेसमयपाइबोथाह॥ धाइनजाइथहाइबो

सरसरिताअवगाह ४४६ तुलसीजसिभावतब्यता तै-
सीमिलैसहाय ॥ आपुनआवैताहिपै कताहितहांलैजाय
४५० कैजुझिबोकैबूझिबो दानकिकायकलेश ॥ चारि
चारुपरलोकपथ यथायोगउपदेश ४५१ पातपातको
सींचिबो नकरुसरगतरुहेत ॥ कटिलकटुकफरफरैगो
तुलसीकरतअचेत ४५२ गढ़िबंधतेपरतीतिबड़ि जेहिस-
बकोसबकाज ॥ कहबथोरसमुझबबहुत गाढ़ेबढ़तआनाज
४५३ अपनोऐपननिजहथा तियपूजहिंनिजभीत ॥ फलै
सकलमनकामना तुलसीपीतप्रतीत ४५४ बरषतकरषत
आपुजल हरषतअर्घनिभानु ॥ तुलसीचाहतसाधुसुर सब
सनेहसनमानु ४५५ श्रुतिगुणकरगुनपुजुगमृग यहिरेव-
तीसखाउ ॥ देहिलेहिधनधरणिधरु गयहुनजाइहिकाउ
४५६ ऊगुनपूगुनबिरजक्रम आभअमूगुणसाथ ॥ हरो
धरीगाड़ोदियो घनफिरचढ़ैनहाथ ४५७ रबि हरदिश
गुणरसनयन मुनिप्रथमादिकबार ॥ तिथिसबकाजनशा-
वनी होइकुयोगबिचार ४५८ शशिसरनवदुइछद सगुण
मुनिफलबसुहरभानु॥मेषादिकक्रमतेगनहि घातचंद्रजिय
जानु ४५९ नकुलसुदरशनदरशनी क्षेमकरीचखचाख ॥
दशदिशिदेखनसगुनशुभ पूजहिमनअभिलाष ४६०
सुधासाधुपुरतरुसुमन सुफलसुहावनिबात ॥ तुलसीसी-
तापतिभगति सगुणसुमंगलसात ४६१ भरतशत्रुसूदन
लषण सहितसुमिरिरघुनाथ ॥ करहुकाजशुभसाचसब
मिलहिसुमंगलसाथ ४६२ रामलषणकौशिकसहित सु-
मिरहुकरहुपयान ॥ लक्षलाभलैजगतयश मंगलसगुन

प्रमान ४६३ अतुलितमहिमावेदकी तुलसीकियेबिचार॥ जोनिन्दत्तनिन्दितभयोबिदितबुद्धअतार४६४बुधिकिसानसरवेदनिज मतेखेतसबसीच॥ तुलसीकृपलखिजानिबो उत्तममध्यमनीच ४६५ सहिकुबोलसांमतिसकल अंगइअनटअपमान॥ तुलसीधर्मनपरिहरिय कहिकरिगये सुजान ४६६ अनहितभयपरहितकिये परअनहितहित हानि॥ तुलसीचारुबिचारुभल करियकाजसुनिजानि ४६७ पुरषारथपूरबकरम परमेश्वरपरधाम॥ तुलसीपैरत सरितज्यों सबहिकाजअनुमान ४६८ चलहुनीतिमगरामपग नेहनिबाहबनीक॥ तुलसीपहिरिअसोबसन जोन परवारेफीक ४६९ ॥ दोहाचारुबिचारुचलु परिहरिबाद बिवाद॥ सुकृतसींवस्वारथअवधि परमारथमर्य्याद॥ ४७० तुलसीसमरथसुमतिजोसुकृतीसाधुसयान॥ जोबिचारिब्यवहरइजगखचलाभअनुमान ४७१ जाइयोगजग क्षेमबिनु तुलसीकेहितराखि॥ बिनुपराधभृगुपति नहुष बेनुबकासुरसाखि ४७२ बढ़िप्रतीतगठिबंधते बड़ोयोग तेक्षेम॥ बड़ोसुसेवकसांइते बड़ोनेमतेप्रेम ४७३ शिष्य सखासेवकसचिव सुतियसिखावनसांच॥ सुनिसमुझहु पुनिपरिहरहु परमनिरंजनपांच ४७४ नारिनगरभोजन सचिव सेवकसखाअगार॥ सरसपरिहरेरंगरस निरस बिषादबिकार ४७५ टूटहि निजरुचिकाजकरि रूठहिं काजबिगारि॥ तीयतनयसेवकसखा मनकेकंटकचारि ४७६ दीरघरोगीदारिदी कटुबचलोलुपलोग॥ तुलसीप्राणसमानते होइँनिरादरयोग४७७पाहीखेतीलगनबढ़ ऋ

गाकोब्याजमगखेत ॥ बैरबढ़ैसोंआपने कियेपांचदुखहेत
४७८ धायलगैलोहाललकि खींचलेइनइनीचु॥समरथपा
पीसोंबैर जानिबिसाहीमीचु ४७६ शोचियगृहीजोमोह
बश करैकर्मपदत्याग॥ सोचिययतीप्रपंचुरचि बिगतबि-
बेकबिराग ४८० तुलसीस्वारथसामुही परमारथतनपी
ठ ॥ अंधकहेदुखपाइहै ढिठिआरोकेहिडीठ ४८१ बिनु
आँखिनकीपानहींपहिंचानतलखिपाइ ॥ चारिनयनकेना
रिनर सूझतमीचनमाइ ४८२ जोपैमूढ़उपदेशको होतो
योगजहान ॥ क्योंनसुयोधनबोधकै आयेश्यामसुजान
४८३ ॥ सोरठा॥ फूलैफरैनबेत यदपिसुधाबर्षहिंजलद॥
मूरखहृदयनचेत जोगुरुमिलैंबिरंचिशिव ४८४॥दोहा ॥
रीझिआपनीबूझपर खीझबिचारिबिहीन ॥ तेउपदेशन
मानहीं मोहमहोदधिमीन ४८५ अनसमुझेअनशोचनो
अवशिसमुझिअहिआपु॥ तुलसीआपुनसमुझिये पलपल
परिपरितापु ४८६ कूपखनतमंदिरजरतआयेधारिबबूर॥
बवहिंनवहिंनिजकाजशिर कुमतिशिरोमणिकूर ४८७
निडरईशतेबोसकै बीसबाहुसोहोइ ॥ गयोगयोकहैसुम
तिसब भयोकुमतिकहकोइ ४८८ जोसुनिसमुझिअनीति
रत जागतरहैजुसोइ ॥ उपदेशबोजगाइबो तुलसीउचित
नहोइ४८९ बहुमुखबहुरुचिबचनबहुबहुअचारब्यवहार॥
इनकोभलोमनाइबो यहअज्ञानअपार ४९० लोगनि
लोभमनाइबो भलोहोनकीआश॥ करतगगनकोयउआ
सोशठतुलसीदास ४९१ अपयशयोगकीजानकी मनि
चोरीकबकान्ह ॥तुलसीरोगरिझाइबो करषिकातिबोना

न्ह ४६२ तुलसीजोपैगुमानको होतोकछूउपाउ ॥ तौकि
जानिकिहिजानिजिय परिहरतेरघुराउ४६३ मांगिमदु-
करीखातते सोवतगोड़पसारि ॥ पायप्रतिष्ठाबढ़िपरी ताते
बाढ़ीरारि४६४तुलसीभेड़ीकीधसनिजड़जनतासनमान॥
उपजतहीअभिमानभो खोवतमूढ़अपान ४६५ लही
आंखिकबआधरे बांझपूतकबल्याय ॥ कबकौड़ीकायालही
जगबहराइचजाइ ४६६ तुलसीनिरभयहोतनर सुनियत
सुरपुरजाइ ॥ सोगतिदेखिअतअछततन सुखसंपतिगति
पाइ ४६७ तुलसीतीरततीरतरु बकहितहंसबिडारि ॥
बिगतनलिनअलिमलिनजल सुरसरिहूंबढ़ियारि ४६८
अधिकारीसबऔसरा भलेउजानिवेमंद ॥ सुधासदनबसु
बारहो चउथिवचउथोचंद ४६९ त्रिबिधिएकबिधिप्रभु
अनुगअवसरकरहिंकुठाट ॥ सूधोटेढ़ोसमबिषम सबमहं
बारहबाट ५०० प्रभुतेप्रभुगनदुखद लखिप्रजहिंसंभारै
राउ ॥ करतहोतकृपाणकी कठिनघोरघनघाउ ५०१ ब्या
लहुतेबिकरालबड़ ब्यालफेनजियजानु ॥ ओहकेखायेमर
तहैं उहखायेबिनुप्राण ५०२ कारणसेकारजकठिन होइ
दोषनहिंमोर ॥ कुलिशअस्थितेउपलते लोहकरालकठोर
५०३ कालबिलोकतईशरुष भानुकालअनुहारि ॥ रविहि
राउराजहिप्रजा बुधबेवहरहिबिचारि ५०४ यथाकमल
पावनपवन पाइकुसंगसुसंग ॥ कहिअकुबासुसुबासतिमि
कालमहीशप्रसंग ५०५ भलेहुचलतपथयोबभय नृपति
योगनयनेम ॥ सुतियसुभूपतिभाषियत लोहपवारितहेम
५०६ मालीभानुकिसानसम नीतिनिपुणनरपाल॥ प्रजा

भागबशहोंहिंगे कबहुंकबहुंकलिकाल ५०७ बरषतहर्ष-
तलोगसब करषतलखैनकोइ ॥ तुलसोप्रजासुभागते
भूपभानुसोहोइ ५०८ सुधासुनाजकुनाजपल आम
अशनसमजानि ॥ सुप्रभुप्रजाहितलेहिकर सामादिक
अनुमानि ५०९ पाकेपकये बिटपदल उत्तममध्यम
नीच ॥ फलनरुलहैंनरेशत्यों करिबिचारमनबीच ५१०
रीझिखीझिगुरुदेतशिख सखासुसाहबस.धा ॥ तोरिखाय
फलहोइभल तरुकाटेअपराध ५११ धरणिधेनुचारितप्र
जातासुबछयेनहोइ॥हाथकछूनहिंलागिहैं कियेगोड़कीगा
इ ५१२ चढ़ैवधूरैचंगज्यों ज्ञानज्योंशोकसमाज ॥ कर्मध
र्मसुखसंपदा ज्योंजानिबेकुराज ५१३ कंटककरिकरिपर
तगिरि शाखासहसखजूरि ॥ मरहिंकुनृपकरिकरिकुनृप
सोकुचालभवभूरि ५१४ कालतोपचीतुपकमहि दारूअ
नयकराल॥पापपलीताकठिनगुरुगोलापुहमीपाल५१५
भूमिरुचिररावणसभा अंगदपदमहिपाल॥धरमरावणहि
सीयबल अचलहोतशुभकाल ५१६ प्रीतिरामपदनीतिर
त धर्मप्रतीतिसुभाइ ॥ प्रभुहिनप्रभुतापरिहरहि कबहुंब
चनमनकाइ ५१७ करकेकरमनुकेमनहि बचनबचनगुण
जानि॥भूपहिभूलिनपरिहरै बिजयबिभूतिसयानि ५१८
गोलीबाणसुमंत्रशर समुझिउलटिमनदेखु ॥ उत्तममध्यम
नीचप्रभु बचनविचारिबिशेखु ५१९ शत्रुसयानोसलिल
ज्यों राखिशीशरिपुनाव ॥ बूड़तलखिपगडगतलखि चप
रिचहूंदिशिधाव ५२० रैयतराजसमाजघर तनधनधर्म
सुभाहु ॥ शांतसुसचिवनसोंपिसुख बिलसहिंनितनरना

हु ५२१ मुखियामुखसोंचाहिये खानपानकोएक ॥ पालै पोषैसकलअँग तुलसीसहितबिबेक ५२२ सेवककरपद नयनसे मुखसेसाहबहोय॥तुलसीप्रीतिकीरीतिसुनि सुक बिसराहहिंसोय ५२३ मंत्रीगुरुअरुबैद्यजो प्रियबोलहिं भयआश ॥ राजधर्मतनतीनिकर होइबेगहीनाश ५२४ रसनामंत्रीदशनजन तोषपोषनिजकाज ॥ प्रभुकरसेनप दादिका बालकराजसमाज ५२५ लकड़ीडौआकरछुलीस रसुकाजअनुहारि॥सोप्रभुसंग्रहपरिहरहि सेवकसखाबि चारि ५२६ प्रभुसमीपछोटेबड़े निबलहोतबलवान॥तुल सीप्रकटबिलोकिये करअँगुलीअनुमान ५२७ साहेबतेसे वकबड़ो जोनिजधर्मसुजान॥रामबांधिउतरेउदधि नाघि गयोहनुमान ५२८ तुलसीभलबरतरुबढ़त निजमूलहिअ नुकूल ॥ सबहिभांतिसबकहँसुखद दलनिफलनिबिनुफू ल ५२६ सघनसगुणसधरमसगण सबलसमाइमहीप॥ तुलसीजेअभिमानबिन तेत्रिभुवनकेदीप ५३० तुलसीनि जकरतूतिबिन मुक्तजानिजबकोइ ॥ गयोअजामिललोक हरि नामसकयोनहिंधोइ ५३१ बड़ोगहेतेहोतबड़ ज्योंबा वनकरदंड ॥ श्रीप्रभुकेसँगसोंबड़ी गयोअखिलब्रह्मण्ड ५३२ तुलसीदानजोदेतहैं जलमेंहाथउठाय॥ प्रतिग्रही जीवैनहीं दातानरकैजाय ५३३ आननछोड़ोसाथजब ता दिनहितूनकोइ॥तुलसीअंबुजअंबुबिनतरणितासुरिपुहोइ ५३४ उरबीपरिकुलहीनहीं ऊपरकलाप्रधान ॥ तुलसी देखुकलायगति साधनधनपहिंचान ५३५ तुलसीसंगति पोचकोसुजनहोतिभयदानि ॥ योंहरिरूपसुताहितेकीनो

गोहरिआनि ५३६ कलिकुचालिशुभमतिहरणि सरलै
दंडैचक्र॥ तुलसीयह निश्चयभई बाढ़ीलेतनबक्र ५३७ गो
खगशेषगवारिखग तीनोंमाहबिशेक॥ तुलसीपीवैंफिरिच
लैं रहैंफिरैंसँगएक ५३८ साधनसमयसोसिद्धिलहि उभै
मूलअनुकूल ॥ तुलसीतीनिउसमयसम तेमहिमंगलमूल
५३९ मातुपितागुरुस्वामिशिख शिरधरिकरहिंस्वभाय॥
लहेउलाभतिनजन्मकर नतरुजन्मजगजाय ५४० अनु
चितउचितबिचारतजि जेपालहिंपितुबैन॥ तेभाजनसुख
सुयशके बसहिंअमरपतिऐन ५४१ ॥ सोरठा ॥ सहजअ
पावनिनारि पतिसेवतशुभगतिलहै॥ यशगावतश्रुतिचा
रि अजहूंतुलसिकाहरिहिप्रिय ५४२॥ दोहा॥ शरणागत
कहँजेतजहिं निजअनहितअनुमानि॥ तेनरपाँवरपापमय
तिन्हैंबिलोकतहानि ५४३ तुलसीतृणजलकूलको निर
धननिपटनिकाज ॥ कीराखैकीसँगचलै बाँहगहेकीलाज
५४४ रामायणअनुहरतशिख जगभयोभारतरीति॥ तुल
सीशठकीकोसुनै कलिकुचालिपरप्रीति ५४५ पातपातके
सींचिबे बरीबरीकेलोन॥ तुलसीखोटेचतुरपनि कलिडह
केकहुकोन ५४६ प्रीतिसगाईसकलगुणबणिजउपायअने
क॥ कलबलछलकलिमलमलिनडहकतएकहिएक ५४७
दंभसहितकलिधर्मसब छलसमेतब्यवहार॥ स्वारथसहि
तसनेहसब रुचिअनुहरतअचार ५४८ चोरचतुरबटपार
भट प्रभुप्रियभरुहाभंड ॥ सबभक्षकपरमार्थी कलिसुपंथ
पापंड ५४९ अशुभबषभूषणधरैं भक्षअभक्षजेखाहि ॥
तेयोगीतेसिद्धनर पूजितकलियुगमाहिं ५५०॥ सोरठा ॥

जेअपकारीचार तिनकरगौरवमानतेइ ॥ मनबचकर्मलबा
र तेबक्ताकलिकालमहँ ५५१॥ दोहा ॥ ब्रह्मज्ञानबिनुना
रिनर कहहिंनदूसरिबात ॥ कौड़ीलगितेमोहबश करहिं
बिप्रगुरुघात ५५२ बादहिंशूद्रद्विजनसन हमतुमतेकछु
घाटि ॥ जानहिंब्रह्मसोबिप्रबर आंखिदिखावहिंडाटि
५५३ साखीसबदीदोहरा कहिकेहिनीउपखान॥ भगति
निरूपहिंभगतकलि निंदहिंवेदपुरान ५५४ श्रुतिसंबत
हरिभक्तपथ संयुतबिरतिबिबेक॥ तेहिपरिहरहिंबिमोह
बश कलपहिंपंथअनेक ५५५ सकलधर्मबिपरीतिकलि
कलपितकोटिकुपंथ पुण्यपरायपहारबन दुरपुराणशुभग्रं
थ ५५६ धातुबादनिरुपाधिबर सदगुरुलाभसभीत ॥ दे
वदरशकलिकालमें पोथिनदुरेसभीत ५५७ शूरसदनती
रथपुरन निपटकुचालिकुसाज ॥ मनहुंमवासेमारिकलि
राजतसहितसमाज ५५८ गौड़गँवारनृपालमहि यमन
महामहिपाल ॥ सामनदाननभेदकलि केवलदंडकराल
५५६ फोरहिंशिललोढ़ासदन लागेअढुकपहार॥ कायर
कूरकपूतकलि घरघरसहसड़हार ५६० प्रकटचारिपथ
धर्मके कलिमहंएकप्रधान ॥ जेनकेनबिधिदीन्हहूदानकरैं
कल्यान ५६१कलियुगसमयुगआननहिंजोनरकरबिश्वा
स॥ गाइरामगुणगणबिमल भवतरबिनहिंप्रयास ५६२
श्रवणघटहुपुनिदृगघटहु घटौसकलबलदेह॥ इतेघटेघटि
हैकहा जोनघटैहरिनेह ५६३ तुलसीपावसकेसमय धरी
कोकिलनमौन ॥ अबतौदादुरबोलिहैं हमैंपूछिहैंकौन
५६४ कुपथकुतर्ककुचालिकलि कपटदंभपाषंड ॥ दहन

रामगुणग्रामजिमिइंधनअनलप्रचंड ५६५ ॥ सोरठा ॥ कलिपाखंडप्रचार प्रबलपापपावरपतित ॥ तुलसीउभैअधार रामनामसुरसरिसलिल ५६६ ॥ दोहा ॥ रामचंद्रमुखचंद्रमा चितचकोरजबहोइ ॥ रामकाजसबकामशुभ समयसुहावनसोइ ५६७ बीजरामगुणगणनयन जलअंकुरपुलकालि ॥ सुकृतीसुनतसुखेतबर बिलसततुलसीशालि ५६८ तुलसीसहितसनेहनित सुमिरहुसीताराम ॥ सगुणसुमङ्गलशुभसदा आदिमध्यपरिनाम ५६९ पुरुषारथस्वारथसकल परमारथपरिनाम ॥ सुलभसिद्धिसबसाहिबी सुमिरतसीताराम ५७० मणिमयदोहादीपजहँ उरघरप्रगटप्रकाश॥ तहँनमोहमयतमतमी कलिकज्जलीबिलाश ५७१ का भाषाकासँस्कृतप्रेमचाहियेसाँच ॥ कामजोआवैकामरी का लैकरैकुमाँच ॥ ५७२ ॥

इतिश्रीगोसाइँतुलसीदासकृतदोहावली सम्पूर्णम् ॥